आशा दीप

डा० जयनारायण कौशिक

आशा दीप

उपन्यास

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नयी दिल्ली-110002

आशा दीप

डा० जयनारायण कौशिक

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1991 : मूल्य : 4.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

प्रकाशकीय

प्रौढ शिक्षा में नवसाक्षरों के लिए साहित्य का अभाव सदैव रहा है। भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ विभिन्न अभिकरणों के रचनात्मक सहयोग से ऐसे साहित्य के निर्माण एवं प्रकाशन की दिशा में अग्रणी रहा है। समय-समय पर प्रयोजन से आयोजित लेखक कार्यशालाओं में से विगत कार्यशाला में प्रस्तुत पुस्तक की रचना संभव हो पायी।

प्रतिष्ठित अनुभवी लेखक डा० जयनारायण कौशिक की यह पुस्तक 'आशा दीप' एक रोचक लघु उपन्यास है। गांव से शहर में आये एक अनपढ़ किशोर की मानसिक स्थिति, उसके आस-पास के माहौल, और साक्षर होने पर उसमे आये बदलाव को इस पुस्तक में कहानी का आधार बनाया गया है।

इस रोचक पुस्तक को आप केवल लाभप्रद ही नहीं वरन् जीवन के विभिन्न सोपानों से जुड़ा होने के कारण अत्यन्त ही उपयोगी पाएंगे।

रूबी किड फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं एशियन साउथ पैसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एजूकेशन के सहयोग से ही यह प्रकाशन संभव हो पाया है। इस हेतु हम सभी के कृतज्ञ हैं।

—कैलाश चौधरी
महासचिव, भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ
प्रबन्ध न्यासी, रूबी किड फाउंडेशन

आशा दीप

आशा दीप

आदमी की हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी। कल जो हवाई किले चंडूखाने के गप्प समझे जाते थे वे आज असलियत बनते जा रहे हैं। रूस ने आकाश में प्रयोगशाला बना ली है। हवा में उड़ रही हवाई पट्टी से धरती से उड़ने वाले जहाज जा जुड़ते हैं। अनंत आकाश की छाती की लम्बाई चौड़ाई नापी जा रही है। आकाश में फूल खिलाना भी पागलपन की बात मानी जाती थी। आने वाले समय में आकाश में खेती ही नहीं बस्तियां बनाने की कल्पना की जा रही है। वैज्ञानिकों की कल्पना असलियत बनकर आंखों के सामने आ रही है। कल्पना करना अच्छी बात है। बस उसे मूर्त रूप देने की हिम्मत होनी चाहिए।

सामने के बगीचे से सटा यह भवन भी राजू भैया के जीवन की साध थी। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था। उन दिनों पढ़ने लिखने की सुविधा कई गांवों के बीच कहीं मीलों दूर होती थी। घर में गरीबी थी। पिछड़े परिवारों के बच्चे तो क्या बच्चों के माता पिता तक भी पढ़ाई की बात नहीं सोच सकते थे।

विदेशी राज था। उसे साधारण आदमी से कोई वास्ता भी नहीं था। वह जीये या मरे, गरीब रहे या भिखारी, पढ़े या न पढ़े, उसे क्या। उसने समाज के कुछ राजा-महाराजाओं से सांठ-गांठ की हुई थी। कुछ अमीर लोगों की पीठ थपथपा कर रायबहादुर, रायसाहब, सर आदि की उपाधियां दे दी जाती थीं। कुछ को जमीन-जागीर दे दी जाती थी। यही साहूकार विदेशी सरकार के लिए टैक्स इकट्ठा करते। मनमाना टैक्स लगा कर गरीबों को और गरीब बनाते। टैक्स न देने पर उनकी जमीन, मकान और खेत-खलिहान नीलाम कर दिए जाते। उन्हें पीट कर गांव से बाहर कर दिया जाता। अपने ही देश में विदेशी बन जाते। दासता कितना बड़ा अपराध है। गरीब में इतना साहस कहां कि वह मालिक के सामने अपना मुंह भी खोलने की हिम्मत करे।

राजू भैया अपने माता-पिता के गरीबी के दुखों को देखता। वह सोचता—पिता जी ने मेरा नाम राज सिंह क्यों रखा? नाम बड़ा और दर्शन छोटे! मैं बड़ा होकर राज

से टक्कर लूंगा। मैं सिंह हूं, सिंह को किसका भय। वह अकेले में सिंह की तरह दहाड़ता और मन ही मन अपने मन के अरमान पूरे करता।

वह सोचा करता—अगर मुझे कहीं पढ़ने-लिखने का अवसर मिले तो मैं बड़ा आदमी बन सकता हूं। मैं कायदे कानून पढ़ सकता हूं। अच्छा कारीगर बन सकता हूं। अपना बगीचे वाला भवन बना सकता हूं। राजकाज में अपना हिस्सा मांग सकता हूं। देश हमारा है, राज भी हमारा ही होना चाहिए।

राजू के पिता आजादी की लड़ाई में शहीद हुए। उसकी मां लंबी बीमारी में चल बसी। राजू अनाथ हो गया। देश आजाद हुआ लेकिन राजू को गरीबी के कारण अपना गांव छोड़ना पड़ा। वह पास के एक छोटे कस्बे में आकर मजदूरी करने लगा।

मजदूरी भी क्या थी ? एक हलवाई की दुकान पर कड़ाही मांजता। बर्तन धोता। हलवाई के बर्तनों पर दुकान का नाम लिखा था। एक दिन राजू कहीं दूध पहुंचाने गया और बदले में दूसरे बर्तन ले आया। हलवाई राजू पर आग बबूला हुआ और बोला—क्या तुम बर्तन पर दुकान का नाम पढ़कर उसे नहीं पहचान सकते थे।

राजू ने भोलेपन में कहा—मुझे तो अपना नाम भी लिखना नहीं आता।

राजू की बात सुनकर हलवाई ने कहा—निरा पशु का पशु ही रहा। अगर तुम्हें किसी बस से भेज दिया जाए तो तू उसका नंबर भी नहीं पढ़ सकता। पुलिस के सिपाही की तरह हर बस को हाथ देकर रोकेगा। तू तो सारी सड़क को ही रोक देगा। शहर का सारा रास्ता ही बंद हो जाएगा। वाह रे बुद्धू राजू!

हलवाई इतनी बात कह कर खिलखिला कर हंस पड़ा। खूब हंसा। राजू को लगा जैसे वह उसकी बेबसी पर हंस रहा है। उसके अनाथपन पर हंस रहा है। उसकी गरीबी पर हंस रहा है। उसकी जिंदगी पर हंस रहा है। राजू की वह कितनी बड़ी लाचारी थी। वह फूट-फूट कर रो पड़ा। उसके आंसू घुटनों तक बह निकले।

उसने घुटने पर पड़े आंसुओं को पोंछा। उसने सोचा—मेरे घुटनों में जान है। चढ़ती जवानी है। यहां से भाग निकलूं और कोई धंधा देखूं। हलवाई के तख्त पर एक चादर ओढ़ कर सो रहने से कैसे गुजर-बसर होगा।

राजू रात को ही वहां से निकल भागा। अपनी मजदूरी के पैसों का हिसाब तक न किया। क्या हिसाब करता। इस वर्ग के लोगों की न कोई आवाज है न इसके लिए सामाजिक न्याय। कैदखाने के कैदियों की छुट्टियों का लेखा जोखा है लेकिन ये बारह महीने रेल के पहियों की तरह रगड़ खाकर पिसते रहते हैं।

राजू एक बाग के पास पहुंचा। उसे भूख लगी थी। पीले-पीले कटोरे से बड़े अमरूद देख कर उसके मुंह में पानी भर आया। गरीब भूख में भी अपना धर्म नहीं छोड़ता। वह चाहता तो चोरी से अमरूद तोड़ सकता था लेकिन उसका भगवान उसके साथ था। क्यों चोरी करता? वह माली के पास गया और अपनी रामकहानी सुनाई। माली को राजू पर तरस आया। गरीब अभी भी दयालु और श्रद्धालु है। धन जोड़ने के लालच ने उसके दिल को अभी पत्थर का नहीं बनाया है।

माली ने कहा–बेटा राजू। मेरी आंखों की बीनाई कमजोर हो गई है। मुझे मेरे काम-काज में हाथ बंटवाने वाले हाथ की जरूरत है। घर में एक बाल विधवा पुत्री है। तू मेरे पास रह।

अंधे को क्या चाहिए, दो आंखें। राजू खुशी से उछल पड़ा। उसने हरियल माली के पैर पकड़ लिए। जैसे भटकते हुए योगी को अचानक भगवान मिल गए।

थोड़े समय में ही राजू अलग-अलग मौसम में फलने वाले फल और फूलों से परिचित हो गया। मित्र और शत्रु पक्षी और कीट-पतंग अब उसके जाने पहचाने थे। राजू बाग का था और बाग राजू का।

समय बीतता रहा। एक रात तीन-चार आदमी हाथ में लालटेन लिए बाग की ओर आते दिखाई पड़े। राजू घबराया—कहीं बाग में चोर तो नहीं आ छिपे? पुलिस को झूठे-सच्चे मुकदमे की कहानी गढ़ने में क्या देरी लगती है।

आने वाले मेहमान सादी पोशाक में थे। राजू का भय कम हुआ। उसने हरियल और उसकी पुत्री चमेली को भी आवाज देकर बुला लिया। दोनों ओर से राम-राम हुई। राजू उड़ती चिड़िया पहचानता था। उसे यह परखते देर न लगी कि आने वाले सज्जन भले आदमी हैं।

आने वाले लोगों ने अपना परिचय दिया। आदमी का नाम था विद्यासागर और महिलाओं का नाम सरस्वती

और दयावती। विद्यासागर ने कहा–हम पास के एक स्कूल में आए हैं। यह स्कूल 15 वर्ष से बड़ी आयु के स्त्री और पुरुषों के लिए है। स्कूल का समय पढ़ने वालों की आसानी के लिए दोपहर से रात तक है। वे अपने फालतू समय में वहां आकर पढ़ना लिखना सीख सकते हैं। पढ़ाई-लिखाई के अलावा कुछ दस्तकारी का काम सिखाया जाता है। वह दस्तकारी ऐसी भी हो सकती है जो पढ़ने वाले के हाल के पेशे को सुधारने के काम आए। स्कूल में कोई फीस नहीं ली जाती। पढ़ने की पुस्तकें और स्लेट आदि भी बिना पैसे की वहीं से मिलती हैं। पढ़ लिख कर अगर कोई अपनी दस्तकारी शुरू करना चाहे तो वे उसे सरकारी बैंक से ऋण भी दिलाने में मदद कर सकते हैं।

राजू और चमेली को ये सब बातें सपना सी लग रही थीं। बिना पैसे पढ़ाई, वह भी फालतू समय में! दस्तकारी सीखने का प्रबंध, अपनी दस्तकारी का काम चालू करने में सरकारी ऋण !!

राजू ने पूछा–कौन ऐसा धन्ना सेठ है जिसने अपना बटुआ हम गरीबों के लिए खोल दिया है ?

सरस्वती ने कहा–सरकार यह इंतजाम कर रही है। टैक्स के रूप में आप लोगों से इकट्ठा हुआ पैसा इस पर खर्च हो रहा है। देश के पैसे को देश से बाहर लूट ले जाता था अब वह देश में रहता है। वह गरीब लोगों के लिए

है । गांव में रहने वाले सौ में से लगभग 18 आदमी पढ़े लिखे हैं और औरतें तो केवल 11 ही पढ़ी लिखी हैं। अनपढ़ आदमी अच्छा कारीगर भी नहीं बन सकता। वह जहां है वहां उत्पादन भी नहीं बढ़ा सकता। उत्पादन कम होगा तो मंहगाई बढ़ेगी। गरीबी बढ़ेगी। गरीबी हटाने के लिए पढ़-लिख कर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। सोचने समझने के तरीके में तब्दीली लानी होगी। दूर दृष्टि ही इसका उपाय है। यही एक जादू है।

हरियाली माली विद्यासागर और सरस्वती की बात सुनकर बड़ा खुश हुआ। उसने कहा—हमारे जमाने में पढ़ाई लिखाई कहां थी। ये बच्चे भी इसका लाभ नहीं उठा पाए। यह तो नई पीढ़ी वाले बच्चों के भाग्य का प्रताप है जो पढ़ाई-लिखाई के स्कूलों की प्याऊ जगह-जगह खुली रही है।

दयावती ने कहा—बाबा धन्यवाद दो उन लोगों को जिन्होंने देश की आजादी के लिए बलिदान दिए। उन्हीं के बलिदानों का प्रताप फूल-फल रहा है। गांधी जी कहते थे मैं देश में पूरी आजादी उस समय तक नहीं मानूंगा जब तक एक आंख में भी आंसू है। देश घोर गरीबी से गुजरा है। गरीब आदमी न्याय भी नहीं मांग सकता। देश के हर आदमी को पढ़ा-लिखा कर ही देश की उन्नति हो सकती है। जिस समय तक हमारे सोचने समझने के तरीके मे अंतर नहीं आएगा उस समय तक देश की धन-दौलत

नहीं बढ़ेगी। हमारी बे पढ़ी-लिखी जनता ने पुराने ऋषि-मुनियों की ज्ञान की जमा पूंजी को समाप्त कर दिया।

हरियल ने कहा—बेटी आप लोगों की बातों ने हमारे बाग में अमृत की वर्षा कर दी है। राजू और चमेली जरूर आपके स्कूल का लाभ उठायेंगे। दिन छिपते-छिपते पक्षी भी अपने घोंसलों में चले जाते हैं। फल तोड़ने और फूल चुगने का समय भी नहीं होता। उस समय ये दोनों ही फुरसत में होते हैं।

हरियल की बात सुनकर राजू और चमेली बड़े खुश हुए। उन्हें रात के स्कूल में जाने की अनुमति मिल गई। विद्यासागर, सरस्वती और दयावती का उनके पास आना भी सफल हो गया। यहां आने से पहले उनके मन में अनेक शंकाएं थीं। उनकी आशंकाओं के बादल छंटे। छंटे ही नहीं उन बादलों से उत्पन्न बिजली की रोशनी ने उन्हें दूसरे घरों तक निडर होकर जाने का रास्ता भी दिखा दिया।

राजू और चमेली ने अगले ही दिन नए स्कूल जाने की तैयारी की। उन्हें लग रहा था जैसे कोई बुढ़ापे में पहली बार बारात चढ़ रहा हो। स्कूल नया-नया सा, अजीब अजीब सा। स्कूल क्या था एक साधारण सा भवन। जमीन पर दरी। एक तरफ आसन आदि बुनने के अड्डे। पास-पड़ोस के और भी महिला-पुरुष वहां आए थे। वहां सभी धर्मों और जातियों के लोग थे। उनको मिलाने के बिंदु थे उनकी गरीबी और निरक्षरता।

राजू ने मन ही मन सोचा—लगता है बूढ़े-पशुओं का मेला लगा है। वह अपनी विनोद की सूझ पर मन ही मन मुसकाया और बड़ी कठिनाई से अपनी हंसी रोकी।

चमेली महिलाओं वाले भाग में बैठती और राजू पुरुष विभाग के कमरे में। पढ़ाई-लिखाई का सिलसिला कुछ दिन चलता रहा। उन्हें अपने पास-पड़ोस, कस्बे और राज के बारे में बड़ी बड़ी जानकारी मिली। देश के राज काज के बारे में जानकारी मिली। राजनेताओं के दांव-पेंच के बारे में जानकारी मिली।

उन्हें अपनी सेहत, सफाई के बारे में भी जानकारी मिली। उन्हें पता लगा कि बिना पैसा खर्चे हम बीमारी से कैसे बच सकते हैं। जिन बीमारियों को लोग देवी-देवताओं का प्रकोप मानते हैं वे हमारी भूल के कारण होती हैं। ठीक समय पर किया गया सादा ताजा भोजन हमें बीमारी से कैसे बचाता है। बच्चों की ठीक प्रकार देखभाल से वे कैसे रोग से बच सकते हैं। उन्हें मौत के मुंह में जाने से कैसे बचाया जा सकता है। यदि माता पढ़ी-लिखी हो तो परिवार को कितना लाभ हो सकता है। पढ़ी लिखी महिला का अर्थ है—स्वस्थ बच्चे, घर में स्वच्छता, संतुलित भोजन, सभ्य जीवन और छोटा परिवार।

राजू को लगा जैसे उस स्कूल की पढ़ाई किताबी शिक्षा नहीं है। वह जीवन के लिए शिक्षा है। स्कूल में

पढ़ने वाले लोग पढ़े-लिखे ही नहीं विद्या में गुने हुए भी हैं।

कुछ पढ़ना लिखना सीखने के बाद राजू ने कहा—विद्यासागर जी, हमें कुछ ऐसी बातें बताइए जिससे हम अपने बगीचे में फल-फूलों का उत्पादन बढ़ा सकें। उन्हें कीड़ों से होने वाली बीमारियों से बचा सकें। इससे हमारी आमदनी भी बढ़ेगी और हमें यहां की विद्या का भी लाभ होगा।

विद्यासागर समझ गए कि जादू वह जो सिर चढ़ कर बोले। यही भावना तो हम लोगों में जगाना चाहते थे। विद्यासागर ने पास के कृषि विभाग के जानकारों को राजू की कठिनाई के बारे में बताने के लिए बुलाया। उन्होंने राजू को पूरी जानकारी दी। स्कूल में आने वाले दूसरे लोगों को भी उस जानकारी का लाभ हुआ। उन्होंने भी अपनी खेती-बाड़ी की समस्याओं के बारे में जानकारी ली। उन्हें लग रहा था जैसे स्कूल और समाज के बीच कोई दूरी नहीं है। अधिकारियों और पढ़ने वालों के बीच कोई छोटे-बड़े

का भाव नहीं है। जिनके दरवाजे को खटखटाने तक की वे सोच भी नहीं सकते थे वे अधिकारी उन्हीं के खेत खलिहानों में मदद करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे स्कूल पहले क्यों नहीं खुले। अगर ऐसा हुआ होता तो अभी तक देश से भुखमरी, बेरोजगारी और गरीबी दूर हो गई होती।

उधर चमेली भी महिला विभाग में भोजन बनाने संबंधी नई-नई बातें सीख गई। उसकी इच्छा थी कि वह अपने बाग में लगने वाले गुलाब के फूलों का गुलकंद बनाना सीखे। आम, सेब, नींबू, बेलगिरी आदि के अचार-मुरब्बे बनाना सीखे। इमली, टमाटर आदि की चटनी बनानी सीखे। फलों का रस बना कर बोतलबंदी का काम सीखे। अपने पास कच्चा माल होते हुए भी बाजार में क्यों लुटें? पांच रुपये की फलों की टोकरी के सौ रुपया ऐंठते हैं। क्यों न हम ये काम सीखें?

चमेली ने अपने मन की बात सरस्वती और दयावती को बताई। वे बड़ी प्रसन्न हुईं। शिक्षा का उद्देश्य इसी चिंतन शक्ति को जगाना ही तो है। मनुष्य अपने भले बुरे की, समाज के भले-बुरे की समझने लगे तो शिक्षा देने का उद्देश्य अपने आप में पूरा हो जाए।

सरस्वती ने महिला मंडल से ऐसे जानकार अधिकारियों को बुलाया जो इन कामों में निपुण थे। लगभग

एक महीना भर यह सिलसिला चलता रहा। स्कूल में आने वाली सभी औरतों को इससे बहुत लाभ हुआ। उनमें से कुछ महिलाओं ने निश्चय किया कि वे फालतू समय में क्यों न अचार मुरब्बे डालने का काम रोजी के रूप में अपना लें। इससे परिवार की आमदनी बढ़ेगी। अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए दो पैसे बच रहेंगे। दयावती उनकी बात को सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।

एक दिन अपना छोटा-मोटा रोजगार चलाने की बात स्कूल में चली। विद्यासागर ने अगले ही दिन सरकारी बैंक के एक अधिकारी को अपने स्कूल में बुलाया। बैंक अधिकारी ने उन्हें पूरी जानकारी दी। सभी को बहुत प्रसन्नता हुई।

उस रात जब राजू और चमेली घर पहुंचे तो हरियल ने कहा—बेटा नए स्कूल में तुमने क्या-क्या सीखा? कभी मुझे भी अपना स्कूल दिखाओ। पढ़ने नहीं तो स्कूल की चार दीवारी में जाकर तो देख लूं।

अगले दिन हरियल को स्कूल आया देख सभी को प्रसन्नता हुई। हरियल हैरान था। क्या वही यह स्कूल है? न बैठने का ठीक इंतजाम, न पूरी छत। छत से तारे झांक रहे हैं। क्या ये भी अनपढ़ हैं जो तांक-झांक कर पढ़ाई सीख लेना चाहते हैं। वह अपने मन की बात पर मुस्कराया।

उसने कहा–विद्यासागर जी। अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं।

हां हां, क्यों नहीं–विद्यासागर ने कहा।

हरियल ने कहा–अगर आप की सरकार इजाजत दे तो इस स्कूल को मेरे बाग वाले मकान में ले चलिए। सारे मकान में कुल मिलाकर हम तीन प्राणी हैं। मैं, चमेली और राजू। बड़ी-बड़ी कोठी वालों को तीन प्राणी होते हुए उनकी कोठियां छोटी पड़ जाती हैं। गरीब ही गरीब की मदद करेगा। यह आप का स्कूल ही नहीं है, यह गरीब समाज के दिल की धड़कन है। गरीब और पिछड़े समाज की आशा का दीप है। इस दीप को मेरे मकान में जगमगाने का अधिकार दो। बस यही विनती है। मैं अपना बाग और मकान स्कूल के नाम लिख दूंगा। बस राजू और चमेली को वहां रहने और काम करने की इजाजत दे देना।

हरियल ज्यों ज्यों ये बातें कह रहा था उसकी आंखों की चमक बढ़ रही थी। लगता था जैसे एक गरीब द्वारा गरीबों की गरीबी का विनाश अपनी मजबूर लाचार आंखों से देख रहा हो। गरीबी एक अभिशाप है। जिसने इसे भोगा है इसके डंक की चुभन को वही अनुभव कर सकता है। उसे जड़ से उखाड़ फेंकने में उसी की रुचि हो

सकती है जो गरीब की पवित्र आत्मा में भगवान के दर्शन करता है।

बगीचे से सटा वह भवन आज सारे कस्बे की दिलचस्पी का केन्द्र है। वह स्कूल है। उद्योगशाला है। गरीबों में आगवानी और पहल-कदमी का मंत्र फूंकने वाला मंदिर है। कितने ही बेकार रहने वाले युवक इसमें कोई न कोई रोजगार सीखकर सीधे रास्ते पर आ गए हैं। बागवानी पर आधारित यहां कई रोजगार सिखाए जाते हैं। यहां मधु-मक्खी पालन केन्द्र है। शहतूत पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। शहतूत की लकड़ी से टोकरियां बनाई जाती हैं। अचार-मुरब्बे की डब्बा बंदी होती है। फलों के रस की बोतलबंदी होती है। मटर-गोभी आदि सब्जियों को जल-रहित करके सुरक्षित करने का काम भी यहां होता है। गरीबों को रुपये के लेन देन के लिए यहां ग्रामीण बैंक भी खुल गया है।

उद्योगों में लगी काम-काजी महिलाओं के छोटे बच्चों

की देख रेख के लिए शिशु पालन केन्द्र भी है। राजू और चमेली यहां अपनी छोटी सी गृहस्थी बसा कर रह रहे हैं। रेडियो और टेलीविजन वाले इस केन्द्र की सफलता की बात सुनकर समय-समय पर आते रहते हैं। राजू के मन में यह विचार आता है कि टेलीविजन पर मेरा चित्र देख कर मेरे गांव के लोग कितने खुश होंगे। एक अनाथ कहां पहुंच गया !

बगीचे वाले मकान के बाहर एक तख्ती लटकी है। इस पर लिखा है 'आशा दीप'। यह किन-किन की आशा का दीप बन कर जगा और किन-किन की आशा का दीप बनेगा इसका अनुमान आप खुद ही लगाएं।

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002